पुरुषोतम मास – 17 मई 2026 से 15 जून 2026

पुरुषोत्तम मास

कर्म और लक्ष्मी रहस्य

जीवन में कर्म को षोषित करने वाले देव भगवान पुरुषोतम और कर्म का पारितोषिक प्रदान करने वाली लक्ष्मी का समय-समय पर पूजन, ध्यान, साधना, तपस्या, मंत्र जप इत्यादि आवश्यक है।

दैनिक क्रम में बाधाएं, समस्याएं, अड़चनें इत्यादि तो आते ही रहते है, हार-जीत भी होती रहती है, सुख-दुःख आते जाते रहते है। परन्तु जीवन निरन्तर गतिमान रूप से इनके साथ ही आगे बढ़ता है। जीवन को आगे बढ़ाने का कार्य भगवान पुरुषोतम द्वारा किया जाता है वे अपने पोषण कार्य के द्वारा वास्तव में हमारे कर्म क्षेत्र को पोषित करते है और लक्ष्मी इसका भुगतान करती है। कर्मों में कमी, या भुगतान में कमी से जीवन चक्र उलझ जाता है।

पुरुषोतम मास इस जीवन चक्र को सुलझाने का समय है। इस काल में गृहस्थ साधकों के साधनाओं के द्वारा यह कार्य अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिये।

यह संसार कुरुक्षेत्र के सदृश है, यह बात लगभग हर व्यक्ति मानता है। कुरुक्षेत्र शब्द का शाब्दिक अर्थ है – कर्म का खेत।

संस्कृत में 'कुरु' शब्द की उत्पत्ति मूलतः 'कृ' (कृ) धातु से हुई है, जिसका अर्थ है **करना, कार्य करना या बनाना।** क्रिया रूप में 'कुरु' शब्द का अर्थ है **आदेश देना, अर्थात 'तुम यह कार्य करो'।** क्षेत्र का अर्थ है खेत।

यदि इन दोनों को जोड़ दिया जाए तो अर्थ होता है वह स्थान जहां क्रिया की जाती है। संसार में आने का अर्थ ही क्रियाशील होना है। ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जो जन्म ले और उसके बाद उसे क्रियाशील नहीं हो एवं क्रिया का उद्देश्य फल की प्राप्ति है, फल अर्थात लक्ष्मी।

यह आवश्यक नहीं है कि यह लक्ष्मी केवल धन के रूप में ही हो। लक्ष्मी के आठ रूप बताए गए हैं, ये आठ रूप जीवन की समृद्धि और पूर्णता के आठ भिन्न-भिन्न आयामों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

आदि लक्ष्मी (आद्य लक्ष्मी) – यह लक्ष्मी का मूल स्वरूप है। यह आध्यात्मिक शक्ति, संतोष और जीवन की मूल स्थिरता प्रदान करती हैं।

धन लक्ष्मी – यह धन, वैभव, सोना, रत्न और आर्थिक समृद्धि की अधिष्ठात्री देवी हैं।

धान्य लक्ष्मी – यह अन्न, कृषि, भोजन और जीवन के पोषण की देवी हैं। इनके आशीर्वाद से घर में अन्न की कमी नहीं रहती।

गज लक्ष्मी – यह राजसत्ता, प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य और सामाजिक सम्मान की प्रतीक हैं। प्रायः इनके साथ हाथियों का चित्रण किया जाता है।

संतान लक्ष्मी – यह संतान सुख, वंशवृद्धि और परिवार की समृद्धि प्रदान करती हैं।

वीर लक्ष्मी (धैर्य लक्ष्मी) – यह साहस, धैर्य, शक्ति और संकटों से लड़ने की क्षमता प्रदान करती हैं।

विजय लक्ष्मी – यह जीवन के संघर्षों में विजय, सफलता और उपलब्धि की देवी हैं।

विद्या लक्ष्मी – यह ज्ञान, शिक्षा, बुद्धि और विवेक प्रदान करती हैं।

इन आठों रूपों से यह स्पष्ट होता है कि **लक्ष्मी केवल धन तक सीमित नहीं हैं, बल्कि जीवन की समृद्धि के हर रूप में**

प्रकट होती हैं - अन्न, ज्ञान, साहस, संतान, सम्मान और विजय के रूप में भी।

और लक्ष्मी हमें इन आठों में से किसी भी रूप में चाहिए होती है। कभी धन के रूप में, कभी संतोष के रूप में, कभी ज्ञान के रूप में, तो कभी वैभव के रूप में। जीवन के विविध पक्षों में विविध प्रकार की लक्ष्मी आवश्यक है।

इसे ही शास्त्र में कर्म का फल कहा गया है। फल की आसक्ति हमें मोह में डाल देती है और फल से पूर्ण निवृत्ति हमें कर्मपथ से विमुख कर देती है।

अर्जुन भी एक समय कर्मपथ से विमुख हो गए थे और उन्हें पुनः कर्म मार्ग पर स्थापित करने के लिए ही भगवान को उन्हें उपदेश देना पड़ा।

कुरुक्षेत्र में दिए गए इस उपदेश में श्रीकृष्ण अर्जुन को अधर्म का नाश करने की प्रेरणा देते हैं।

सम्बन्धों की माया से ऊपर उठकर धर्मपथ का अनुसरण करने का उपदेश देते हैं। भगवद् गीता के 11वें अध्याय में श्रीकृष्ण अर्जुन को अपना विराट रूप दिखाते हैं, जिसे विश्वरूप भी कहा जाता है।

इस दिव्य रूप में अर्जुन ने पूरे ब्रह्माण्ड को भगवान के भीतर समाहित देखा, जिसमें अनन्त मुख, नेत्र और दिव्य आभूषण थे।

विष्णु के हाथ में सुदर्शन चक्र है। विष्णु का सबसे शक्तिशाली अस्त्र सुदर्शन चक्र है, जिसे उन्होंने अपने हाथ में धारण किया हुआ है। यह अस्त्र जिस पर भी छोड़ा जाता है, उसका संहार निश्चित होता है।

सुदर्शन चक्र का रहस्य क्या है?

सुदर्शन चक्र वास्तव में इस सांसारिक चक्र का प्रतीक है, जिसमें जन्म लेते ही हम सब उलझ जाते हैं। यह चक्र हमें इस प्रकार उलझाकर रख देता है कि हम इसके आगे देख ही नहीं पाते।

और यह उलझन लक्ष्मी की माया से उत्पन्न होती है। लक्ष्मी ही हमें मोहांध कर देती हैं, और फिर हम सही और गलत के बीच इतने भ्रमित हो जाते हैं कि अंततः स्वयं भगवान को आकर अर्जुन को ज्ञान देना पड़ता है।

अब अर्जुन तो भगवान का मित्र था, इसलिए भगवान उसके लिए प्रकट भी हो सकते थे और उसे अपना विराट रूप भी दिखा सकते थे।

परंतु सामान्य मनुष्य भगवान का सखा नहीं होता। इसलिए विष्णु ने अपने प्रिय पुरुषोत्तम मास में प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह विधान रखा है कि यदि वह उनकी पूजा करे, तो वह लक्ष्मी की प्राप्ति में आने वाली बाधाओं को पार कर सकेगा और अपने कर्मपथ को स्पष्ट रूप से देख पाएगा।

भगवान भगवान विष्णु और भगवती लक्ष्मी सृष्टि के संतुलन और संचालन के प्रतीक है। विष्णु जहां इस ब्रह्माण्ड के पालनकर्ता हैं, वहीं लक्ष्मी उस पालन के लिए आवश्यक धन, ऐश्वर्य और समृद्धि की अधिष्ठात्री हैं। यह दोनों शक्तियां एक-दूसरे की पूरक मानी जाती हैं।

विष्णु और लक्ष्मी का संबंध केवल भौतिक धन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन के संतुलन, धर्म और सदाचार से भी जुड़ा है। भगवद्गीता में भगवान विष्णु (कृष्ण रूप में) कहते हैं-

'योगक्षेमं वहाम्यहम्'

अर्थात् जो भक्त श्रद्धा से उनका स्मरण करता है, उसके योग (आवश्यकताओं की प्राप्ति) और क्षेम (सुरक्षा) का वह स्वयं वहन करते हैं। यहां लक्ष्मी का स्वरूप उस 'योग' में प्रकट होता है और विष्णु 'क्षेम' के रूप में उसकी रक्षा करते हैं।

लक्ष्मी जी चंचला कही जाती हैं, अर्थात् वे स्थायी नहीं रहतीं, परन्तु जहां विष्णु का निवास होता है, वहां वे स्थिर हो जाती हैं। इसका गूढ़ अर्थ यह है कि यदि जीवन में धर्म, सत्य और संयम (जो विष्णु के गुण हैं) हो, तो धन और समृद्धि (लक्ष्मी) स्थायी रूप से बनी रहती है। मनुष्य अपने जीवन में विष्णु के गुणों को धारण करे, तो लक्ष्मी का आगमन और स्थायित्व स्वतः सुनिश्चित हो जाता है। यही इस दिव्य संबंध का वास्तविक संदेश है।